SET/NET/JRF HINDI

सेट/ नेट हिंदी

समकालीन हिंदी क वता

समकालीन आ र्थक एवं सामाजिक चेतना का उद्घाटन -

इस क वता के क वयों ने समकालीन आ र्थक, सामाजिक एवं राजनीतिक प्रश्नों का यथार्थ वर्णन कया है। ये क व ऊंचे पदों के लए लालायित नहीं है। ये क व अपने आसपास के अनुभवों को क वता में स्थान देते हैं।

समकालीन हिंदी क वता

राजनीतिक चेतना का उद्घाटन -

सन **1947** में हम स्वतंत्र हुए, तब से लेकर आज तक अनेक आम-चुनाव हुए। राजनीतिक दलों ने 'गरीबी-हटाओ' के अनेक नारे दिए। कुछ छुटपुट उपलब्धियों के अतिरिक्त आम-आदमी को भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, प्रदूषण तथा आतकवाद के सवाय कुछ नहीं मला। लोगों का उत्साह और आशा मद होने लगी। इतने अ धक वर्षों में राजनीतिक जीवन का घोर नैतिक पतन हुआ। अमीर अमीर होता चला गया और गरीब गरीब। राजनीति से जुड़े नेताओं द्वारा कए गए आ थक घोटालों के कारण आम-आदमी का वश्वास लोकतत्र से उठने लगा है। समकालीन क व अनुभव की इस सच्चाई को महसूस करता है।

समकालीन हिंदी क वता

यौन अनुभव का अत्य धक एवं अश्लील चत्रण -

समकालीन क वता की एक और महत्वपूर्ण प्रव ृत्त है - यौन अनुभव। इस प्रव ृत्त ने इस क वता की रचना प्र क्रया को अत्य धक प्रभा वत क या है। कुछ आलोचक इसे 'अक वता आंदोलन' की मुख्य प्रव ृत्त मानते हैं। यौन आकर्षण मनुष्य की सबसे बड़ी स्वाभा वक और प्रबल जै वक प्रव ृति है। कोई भी स्वस्थ स्त्री या पुरुष इसके आकर्षण से बच नहीं सकता। इस काल के क व यौन अनुभव के चत्रण में ऐसी शब्दावली का प्रयोग करने लग गए जो सभ्य समाज में वर्जित थी।

समकालीन हिंदी क वता

वास्त वक स्वतंत्रता की समस्या -

सतही तौर पर देखने से बुर्जुवा लोकतंत्र में वाणी
स्वतंत्रता का नारा बड़ा ही आकर्षक लगता है। ले कन
इसकी वास्त वकता कुछ और ही है। आज के लोकतंत्र में
हमें स्वतंत्रता प्राप्त है। ले कन जीवन की मूलभूत
आवश्यकताओं की पूर्ति की गारंटी कसी के लिए नहीं है।
आज की बुर्जुवा व्यवस्था में स्वतंत्रता के नाम पर इतना
अ धक वरोधाभास है क आज का मनुष्य पूर्णता भ्र मत
हो चुका है। वशेषकर आज का श क्षत निम्न-मध्यवर्ग
अ धक वभ्र मत है। सच्चाई तो यह है क आजादी के
बाद अंग्रेजी साम्राज्य तो चला गया ले कन राजनीतिक
बदलाव के सवाय कुछ नहीं बदला है।

समकालीन हिंदी क वता

व्यंग्य की अ भव्यक्ति -

सम्कालीन क वता का व्यंग्य नितांत तीखा एव मा मक है। इस दृष्टि से लीलाधर जूगूड़ी की 'बलदेव खटीक', सौ मत्र मोहन की 'लक़मान अली' ध्रव देव मिश्र की 'हवा बही गावों में' तथा हरिहर द वेदी की 'खत' आदि उल्लेखनीय क वताएं हैं। क वयों के व्यंग्य आज के जीवन से सम्बद्ध है तथा राजनीतिक, सामाजिक, आ थक वसंगतियों पर करारा प्रहार करते हैं।

समकालीन हिंदी क वता

वचार आंदोलन का उद्घाटन -

साठोत्तरी क वता तथा समकालीन क वता में वचार आन्दोलन की काफी हलचल दिखाई देती है। इन क वयों की क वता आदोलन की क वता है। इनकी क वताओं को पढ़कर सामान्य पाठक का मन भी आंदो लत हुए बिना नहीं रह सकता। कारण यह है क समकालीन क वता में यदि संवेदना और समय है तो वचार की गहनता भी है। वहा अनुभूति और वचार, एहसास और समझ एक दूसरे से इतने घुले- मले है क यह काव्य भावात्मक और बौद धकता दोनों स्तरों पर आंदो लत करता है। क वता को पढ़कर पाठक बार-बार वचार करने लगता है क हमें बनी हुई अवधारणाओं पर पुन वचार करना चाहिए।

समकालीन हिंदी क वता

यथार्थवादी दृष्टिकोण -

यथार्थ का अर्थ है - जो कुछ हमारे सामने हैं अथवा जो कुछ अस्तित्व में है वही यथार्थ है। जब हम साहित्य के क्षेत्र में यथार्थ की चर्चा करते हैं तो हमारा मतलब है - जो कुछ हमारे आसपास घट रहा है । समकालीन क वता का क व अपने आसपास के यथार्थ से पूर्ण तरह प्रभा वत है। यदय प पूजीवादी समाज यथार्थ को ढकने का प्रयास करता है ले कन एक सच्चा क व भ्रात न होकर सजगता पूर्ण यथार्थ का वर्णन करता है।

समकालीन हिंदी क वता

सांस्कृतिक व भन्नता -

समक़ालीन क वता में हमें सांस्कृतिक वपन्नता के दर्शन होते हैं। इसक़ा एक कारण यह है क हमारी संस्कृति के अ धकाश मूल्य अपना संदर्भ खो रहे हैं। नया बनता समाज उन्हें छोड़ रहा है। हम यह भी कह सकते क देश की वर्तमान पीढ़ी पराने सास्कृतिक मूल्यों को निभाने में कठिनाई का अनभव कर रही है। आठवे दशक तक आते-आते संस्कृति के प्रति आक्रमण और आक्रोश और भी तीव्र हो गया है। समकालीन क वता में संस्कृति के प्रति यह बेगानापन हमें बार-बार सुनाई पड़ता है।

समकालीन हिंदी क वता

कला पक्ष -

समकालीन क वता का कथ्य, शल्प, भाषा, सौंदर्य-बोध सभी कुछ बदला हुआ है। समकालीन क व नए प्रतीकों की खोज में संलग्न है। यदय पे इन क वयों की भाषा साहित्यिक हिंदी नहीं कही जा सकती। ले केन इनमें भद्रजनों की भाषा नहीं है, बल्कि शब्द कौशल और वाक् चातुर्य के स्थान पर डंक मारते हुए असभ्य और आघाती शब्द हैं। भाषा का अ भजात्य तो बिल्कुल समाप्त हो गया है। सड़क की भाषा और घटिया मुहावरों के प्रयोग के कारण एक सर्वथा नवीन सौंदर्यशास्त्र उभर कर सामने आया। जिन शब्दों, मुहावरों को प्रगतिवादियो ने भी स्वीकार नहीं कया था समकालीन क वता में भी स्वीकृत हो गए। हरामखोर, बदतमीज, लफंगा, भड़ुआ, मूत्रमार्ग आदि वर्जित शब्द क वता में भी स्थान पा गए। वस्तुत: समकालीन क वता में काव्य वर्जनाओं का बहिष्कार कया गया है और क वता के लए कोई भी शब्द और कोई भी भाव-मुहावरा अस्पृश्य नहीं रह गया है।

समकालीन हिंदी क वता

समकालीन क वता के प्रमुख क व -

मुक्तिबोध, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह, कुमारेंद्र, आलोक धन्वा, श्रीराम तिवारी, धू मल, शलभ श्रीराम सिंह, कुमार वकल, वजेंद्र, पंकज सिंह, निर्मल वर्मा, आनंद प्रकाश, चंचल चौहान, श श प्रकाश आदि समकालीन क वता के प्रमुख क व हैं।